पराया खून

मौसम का पहला हिमपात हुआ। रात को दोन के पार से तेज हवा चल पडी, स्तेपी मे पाले से ढकी झाडिया खडखडाने लगी, हवा ने बर्फ के अस्तव्यस्त ढेरो को सवार दिया और उबड-खाबड सडको को समतल बनाने लगी।

रात ने कज्जाको के गाव को नीरवता के हरित धुधले आवरण मे ढक दिया। घरो के पिछवाडे मे अनजुती, जगली घास से ढकी स्तेपी ऊघ रही थी।

आधी रात को बीहडो मे भेडिये की दबी-दबी हूक सुनायी पडी, गाव के कुत्तो ने भौककर उसका जवाब दिया और गवरीला दादा की नीद टूट गयी। अलावघर की टाड से पैर लटकाकर, बल्ली को पकडे हुए वह बडी देर तक खासते रहे, बलगम थूककर उन्होने तम्बाकू की थैली निकाली।

हर रात मुर्गो की पहली बाग के बाद दादा उठ जाते, बैठे-बैठे सिगरेट पीते, खासते, खखारकर फेफडो से बलगम निकालते। खासी के दौरो के बीच दिमाग मे चिर-परिचित विचारो का ताता बध जाता। दादा की सोच का विषय बस एक ही था – उनका बेटा, जो युद्ध मे लापता हो गया था।

इकलौता था – पहला और आखिरी। उसी के लिये दिन-रात हाडतोड काम करते थे। जब लाल सेना मे लडने के लिये उसे मोर्चे पर भेजने का समय आया – बैलो की दो जोडी बाजार ले गये, उनकी बिक्री से मिले पैसो से एक कल्मीक से फौज लायक घोडा खरीदा। घोडा क्या, पूरा तूफान था, हवा से बाते करता था। सदूक से अपने दादा की चादी के काम की जीन और लगाम निकाली। विदाई के समय कहा

"देखो, पेत्रो, मैने तुम्हे बढिया सामान से लैस कर दिया है,

कोई अफसर तक ऐसे सामान के साथ शान से जा सकता है उसी तरह सेवा करना जैसे तुम्हारे बाप ने की, कज्जाक फौज और शात दोन की नाक मत कटने देना! तुम्हारे दादा-परदादो ने जारो की सेवा की, तुम्हे भी करनी चाहिये! "

दादा हरी चादनी से चमकती खिडकी मे देख रहे है, बाहर आगन मे सरसराती, न जाने क्या तलाशती हवा की साय-साय को सुनते हुए उन दिनो को याद कर रहे है जो न लौटेगे, फिर न वापस आयेगे

रगरूट की विदाई के समय छप्पर गवरीला के तले कज्जाक गला फाड-फाडकर पुराना कज्जाक गीत गा रहे थे

अरे हम लडते है पाते बाधकर
सुनते है सिर्फ हुक्म।
कमाडर आका हमारे देते जो हुक्म
पूरा करते है हम उसका
मार-काट करके ही लेते है हम दम!

मेज पर बैठा पेत्रो मदहोश था, उसका चेहरा सफेद-फक था, उसने आखिरी 'रकाब' का जाम पीकर थकान के साथ आखे भीची, पर घोडे पर सधकर बैठ गया। तलवार ठीक की और जीन मे झुककर अपने आगन की मुट्ठी भर मिट्टी उठा ली। न जाने अब कहा वह सोया पडा है, न जाने परदेस में किस जमीन की गोद मे लेटा हुआ है?

दादा जोर से खासते है, छाती में फेफडे घर्र-घर्र करते है और जब बलगम निकालकर वह झुकी कमर को बल्ली मे टिकाते है वही जाने-पहचाने विचार फिर उन्हे घेर लेते है।

* * *

बेटे को विदा किया और एक महीने बाद लाल सैनिक आ गये। दुश्मनो की तरह वे परपरागत कज्जाक रहन-सहन मे घुस गये, दादा के आम, दैनदिन जीवन को उन्होने खाली जेब की तरह पलट दिया। पेत्रो मोर्चे की उस ओर, दोनेत्स नदी के पास था, लडाइयो मे बहादुरी दिखाते हुए जमादार बनने का जतन कर रहा था और गाव मे गवरीला दादा मन ही मन परदेसियो, 'लालवालो' के प्रति तीव्र घृणा को

उसी तरह बड़े प्रेम से पाल-पोस रहा था जैसे कभी उसने अपने लाड़ले पेत्रो को पाला था।

वह उन्हें चिढ़ाने के लिये कज़्ज़ाक स्वाधीनता की प्रतीक लाल पट्टियोवाली शलवारनुमा ऊनी पतलून में घूमता था। गारद की नारंगी किनारीवाला चेकमेन* पहनता था, जिम पर कभी लगे सार्जेंट-मेजर के फ़ीतों के निशान थे। ज़ार की जी-जान से सेवा के लिये मिले मेडल और क्रॉस छाती पर टांगकर इतवार के दिन गिरजे जाता। भेड़ के खाल के ओवरकोट को खोले रखता ताकि सब देख सकें।

एक बार गांव की सोवियत के अध्यक्ष ने मिलने पर उसे कहा:

"उतार दे, दादा ये लटकने! गुज़र गया इनका ज़माना।"

बुड्ढा भड़ककर बोला:

"तू कौन होता है ऐसा हुक्म चलानेवाला, क्या तूने टांगा था इन्हें, जो उतारने को कह रहा है?"

"जिसने टांगा, वह तो कब से क़ब्र में सड़ रहा है।"

"सड़ने दो!.. पर मैं नही उतारूंगा! क्या मरे से उतारेगा?"

"तुम भी क्या कहते हो मैं तो तुम्हारा भला सोचकर सलाह दे रहा हूं, मेरी बला से तो तुम इनसे चिपककर सोओ, पर कुत्ते.. कुत्ते तो तुम्हारी पैंट पर पैबद लगवा देंगे! वे तो अब ऐसे भेस में लोगो को देखने के आदी नही रहे, तुम्हे पराया समझ बैठेंगे.."

वह अपकार का कड़वा घूंट पीकर रह गया। तमग़े उतार डाले पर मन ही मन अपकार की ठेस बढ़ते-बढ़ते क्रोध मे बदल रही थी।

बेटा लापता हो गया — किसके लिये अब दौलत जमा करे। कोठरिया ढह रही थी, मवेशी बाड़ा तोड रहे थे, भेड-बकरियो की कोठरी का छप्पर आंधी में उड़ गया था, अब उसकी कडियां गल रही थी। खाली अस्तबल मे चूहे मौज कर रहे थे, बरामदे मे रखी दराती जंग खा रही थी।

कज़्ज़ाक गांव से जाते समय घोड़े ले गये थे, बचे-खुचे "लालवाले" ले गये। और लाल सैनिकों से एवज़ में मिले, टांगों पर लम्बे-लम्बे

* चेकमेन — कज़्ज़ाक सैन्यदल की वर्दी का कोट। — स०

बालो और बडे-बडे कानोवाले आखिरी घोडे को पतझड मे मखनो* के लोग फोकट मे खरीद ले गये। उसके बदले वे बुड्ढे को एक जोडी अंग्रेजी गेटर छोड गये।

"हम से भी तुम्हे कुछ मिलना ही चाहिये!" मखनो का मशीनगन चालक आख मारकर बोला। "हमारे माल से अमीर बनो दादा!"

दसियो साल से जमा की गयी सपत्ति स्वाहा हो रही थी। काम करते हुए हाथ लटकते थे, पर वसत मे जब खाली, दीन और क्लात स्तेपी पर पाव पडते – बूढे को भूमि अपनी ओर खीचती, रात को उसका अश्रव्य स्वर पुकारता लगता। बूढा बेबस होकर बैलो को हल मे जोतता और स्तेपी की छाती पर हल चलाने के लिये चल पडता, अतृप्त श्यामल भूमि मे गेहू के उम्दा बीज बिखेरता।

कज्जाक सागर तट से और सागर पार से लौट रहे थे पर उनमे से किसी ने भी पेत्रो को नही देखा था। उसके साथ विभिन्न रेजिमेंटो मे रहे, विभिन्न स्थानो पर गये – रूस भला छोटा है? – पर पेत्रो की रेजिमेंट मे शामिल उसके गाववासी कुबान प्रदेश मे कही ज्लोबिन के दस्ते से मुठभेड मे अपनी पूरी रेजिमेंट के साथ खेत रहे थे।

गवरीला अपनी बुढिया से बेटे के विषय मे लगभग कोई बात नही करता था।

रात को सुनता कि बुढिया तकिये को आसुओ से भिगो रही है, नाक से सुड-सुड कर रही है।

"क्या हुआ बुढिया?" वह कराहकर पूछता।

कुछ देर चुप रहकर वह बोलती

"लगता हैं अलावघर की गैस भर गयी है घर मे   सिर मे दर्द-सा हो रहा है।'

वह यह न जताता कि उसे असलियत मालूम है, सलाह देता

"अरे खीरे की काजी पी लो। कहो तो तहखाने से ले आऊ?"

'सो जाओ। ऐसे ही ठीक हो जायेगा!"

और फिर मकडी के अदृश्य जाले की तरह घर मे नीरवता छा

* मखनो – उक्राइना म सोवियत सत्ता के खिलाफ लडनेवाले एक गिरोह का सरदार। – स०

जाती। चांद धृष्टता के साथ खिड़की में झांकता, पराये दुख, मां की पीड़ा का आनंद लेता।

फिर भी उन्हें बेटे के लौटने की प्रतीक्षा और आशा थी। गवरीला ने भेड़ की खालें कमाने के लिये दे दीं और बुढ़िया से बोला:

"हम दोनों तो जैसे-तैसे गुज़ारा कर लेंगे, पर पेत्रो लौटकर क्या पहनेगा? सर्दियां आ रही हैं, उसके लिये भेड़ की खाल का ओवरकोट सिलवा लेना चाहिये।"

उन्होंने प्योत्र के नाप का ओवरकोट सिलवाकर संदूक़ में रख दिया। उसके लिये रोज़मर्रा पहनने के बूट भी बनवा लिये। बूढे ने अपना वर्दी का नीला फ्रेंच कोट संभालकर रख रखा था, उस पर तंबाकू छिड़क दिया ताकि कीड़े न काट दें। और जब मेमने को हलाल किया तो उसकी खाल से बूढे ने बेटे के लिये टोपी सी और खूटी पर टांग दी। आंगन से जब घर में घुसता, तो लगता कि बस अब पेत्रो बग़ल के कमरे से बाहर निकलेगा और मुस्कराकर पूछेगा: "क्यों, बाबा, ठंड है बाहर?"

कोई दो-एक दिन बाद की बात है। शाम को बूढ़ा ढोरों को चारा-पानी देने गया था। नाद में चारा डालकर वह कुएं से पानी खींचना चाहता था, पर उसे याद आया कि दस्ताने तो घर में भूल आया। लौटकर उसने दरवाज़ा खोला और देखा कि बुढ़िया बेंच के पास घुटनों के बल बैठी पेत्रो के लिये बनायी गयी नयी टोपी को छाती से चिपकाकर, बच्चे की तरह झुला रही थी।..

बूढ़े की आंखों में अंधेरा छा गया, वह खूंख्वार जानवर की तरह उस पर झपटा, उसे ज़मीन पर धकेलकर होंठों पर निकले फेन को गटकते हुए चिल्लाया:

"छोड़, डायन!.. छोड़!.. तू कर क्या रही है?!"

टोपी छीनकर उसने संदूक़ में पटकी और उस पर ताला टांग दिया। बस तब से बुढ़िया की बायी आंख फड़कने लगी और मुंह टेढ़ा हो गया।

दिन और सप्ताह गुज़रते जा रहे थे, दोन में पानी बहता जा रहा था, पतझड़ के तेज़ बहाव में वह सदा की तरह स्वच्छ और पारदर्शी हरा था।

उस दिन दोन के किनारों पर बर्फ़ जम गयी। पीछे छूटे जंगली

हमो की डार गाव के ऊपर से गुजरी। शाम को पडोसी का लडका दौडा-दौडा गवरीला के पास आया, देव-प्रतिमा के सामने हडबडी मे सलीब बनाकर बोला

"सब ठीक-ठाक है?"

"भगवान की दया है।"

"दादा आपने सुना? प्रोखोर लिखोवीदोव तुर्की से लौटा है। वह आपके पेत्रो की रेजिमेंट ही मे तो था!"

गवरीला खासी के कारण हाफता जल्दी-जल्दी कदम रखता तेजी से गली मे जा रहा था। प्रोखोर घर पर नही मिला वह अपने भाई के गाव गया हुआ था, कल आने को कह गया था।

गवरीला रात भर नही सोया। अनिद्रा उसे सता रही थी। पौ फटने से पहले उसने दीया जलाया और नमदे के बूटो पर तलवे टाकने लगा।

भोर के धुधले प्रभात मे उषा की क्षीण लालिमा फूटी। सुबह हो गयी पर चद्रमा आकाश के बीचो-बीच लटका रह गया, शक्ति उसमे इतनी नही बची थी कि काली घटा तक जाकर दिन भर को छिप जाये।

* * *

नाश्ते से पहले गवरीला खिडकी से झाका, न जाने क्यो वह फुसफुसाकर बोला

"प्रोखोर आ रहा है!"

प्रोखोर ने घर मे प्रवेश किया, वह बिलकुल भी कज्जाको जैसा नही लग रहा था, परायी वेशभूषा मे था, उसके पैरो मे नाल जडे अग्रेजी बूट चरमरा रहे थे, अजीब-सा ओवरकोट उसके कधो पर बोरी की तरह लटका था शायद किसी बेगाने का उतारा था।

"गवरीला वसील्यिच, ठीक-ठाक तो हो न!"

"प्रभु की कृपा है! आओ, बैठो।"

प्रोखोर ने टोपी उतारी, बुढिया का अभिवादन किया और देव-प्रतिमाओ के पासवाले कोने मे बेच पर बैठ गया।

"देखो तो, मौसम कैसा हो गया, बर्फ इतनी पडी है कि चलना दूभर है!"

"हा, बर्फ इस बार जल्दी पड गयी   पुराने जमाने मे तो इन दिनो ढोर बाहर चरते थे।"

कुछ देर के लिये बोझिल चुप्पी छा गयी। देखने मे तो गवरीला विरक्त और सतुलित लग रहा था, वह बोला

"छोरे, परदेस मे तो तू बुड्ढा हो गया!"

"जवान होने की कुछ वजह ही नही थी गवरीला वसीलिच!" प्रोखोर ने मुस्कराकर उत्तर दिया।

बुढिया ने मुह खोला

"हमारा पेत्रो   "

"चुप बुढिया!   " गवरीला ने सख्ती से उसे डाटा। "आदमी बाहर से आया है, दम तो लेने दे   वक्त आयेगा   पूछ लेना!   "

मेहमान की ओर मुडकर उसने पूछा

"हा, तो प्रोखोर इग्नातिच   दिन कैसे गुजरे?"

'तारीफ करने लायक कोई बात है नही। लगडे कुत्ते के मानिद किसी तरह घर तक पहुच गया, यही गनीमत है।"

"यह बात है   मतलब   तुर्को के यहा मुसीबते झेलनी पडी?"

"बडी मुश्किल मे गुजारा कर होता था,   प्रोखोर ने मेज पर उगलियो से थाप की और बोला, "तुम भी   गवरीला वसीलिच, काफी बूढे हो गये, तुम्हारे सिर के देखो कितने बाल सफेद हो गये   सोवियत सत्ता मे आप लोग कैसे रह रहे है?"

'बेटे की बाट जोह रहा हू   बुढापे मे हमे सहारा देन के लिये   गवरीला टेढे होठो से मुस्कराया।

प्रोखोर ने झट से नजरे दूसरी ओर मोड ली। गवरीला ने यह देखकर सख्ती से साफ-साफ सवाल किया

"बोलो   कहा है पेत्रो?'

"क्या आपने नही सुना?"

'तरह-तरह की बाते सुनी है" गवरीला चट से बोला।

मेजपोश की मैली झालर को उगलियो पर लपेटता प्रोखोर कुछ देर तक चुप बैठा रहा।

"शायद जनवरी की बात है   हा-हा, जनवरी की ही है, हमारा रिसाला नोवोरोस्सीस्क के पास पडाव डाले हुए था   यह शहर समुदर के किनारे है   बस पडाव डाले हुए थे   "

"क्या मारा गया ? .." गवरीला ने झुककर दबे स्वर में फुसफुसाहट के साथ पूछा।

प्रोख़ोर नज़रें झुकाकर कुछ देर चुप रहा, मानो उसने सवाल सुना ही नही।

"हम वहां तैनात थे, उधर लाल सेना पहाड़ों की तरफ़ बढ़ रही थी, हरी सेना से जुड़ने के लिये। आपके प्योत्र को रिसाले के कमांडर ने टोह लेने के लिये भेजा... कमांडर हमारा था सूबेदार मेनिन... बस तभी यह हुआ ."

अलावघर के पास टन् से देग गिरा, बुढ़िया हाथ फैलाकर पलग की ओर जाती दिखाई दी, गले से रुलाई फूट रही थी।

"मत चीख ! ! " गवरीला घुड़ककर चिल्लाया, मेज़ पर कोह-नियां टिकाकर प्रोख़ोर को एकटक देखता हुआ धीरे-धीरे थके स्वर मे बोला

"पूरी भी कर बात ! "

"टुकड़े-टुकड़े कर दिये ! . " प्रोख़ोर चिल्लाकर खड़ा हुआ, उसका चेहरा पीला पड़ गया था, बेंच पर वह अपनी टोपी को टटोलता हुआ बोला। "पेत्रो को जान से मार डाला... वे जगल के पास रुके थे दम लेने के लिये ताकि घोड़े भी कुछ आराम कर लें, उसने ज़ीन की पेटी ढीली कर दी, उधर जंगल में से लाल सैनिक आ धमके.. " जल्दी-जल्दी बोलने के कारण प्रोख़ोर का सांस चढ़ रहा था, कांपते हाथों से वह टोपी को मसल रहा था। "पेत्रो ने ज़ीन की पेटी थामी और ज़ीन खिसक कर घोडे के पेट पर आ गयी... घोड़ा बिदक गया... नही सभाल पाया, वही रह गया . बस ! ."

"अगर मैं तेरी बात पर विश्वास न करूं ? .." गवरीला शब्द चबा-चबाकर बोला।

प्रोख़ोर बिना पलटे जल्दी-जल्दी दरवाज़े की ओर चल पड़ा।

"मर्ज़ी आपकी है गवरीला वसीलिच, पर मैंने सच बताया... मैं सच बोल रहा हूं .. सिर्फ़ सच... अपनी आंखों से देखा..."

"अगर मैं इस पर यक़ीन नही करना चाहता ? ! " गवरीला तमतमाकर बोला। उसकी डबडबायी आंखों में खून उतर आया। क़मीज़ का गरेबान फाड़कर, बालों से ढकी छाती उघाड़कर, आहें भरता हुआ, पसीने से भीगे सिर को झटकता हुआ वह प्रोख़ोर पर

चढ गया, जो उसे इस हालत मे देखकर सहम गया।

"इकलौते बेटे को मार डाला?! मा-बाप के सहारे को?! मेरे पेत्रो को?! झूठ बोलता है, कुतिया की औलाद! सुना तूने?! तू झूठ बोलता है! मै यकीन नही करता!"

पर रात को ओवरकोट पहनकर अहाते मे निकला, बर्फ पर नमदे के बूट चरमराता खलिहान मे गया और पुआल के ढेर के पास खडा हो गया।

स्तेपी मे हवा चल रही थी बर्फ का बुगदा उड रहा था चेरी की नगी झाडिया काले सख्त अधेरे से लदी हुई थी।

"बेटा!" गवरीला ने दबे स्वर मे पुकारा। कुछ रुककर बिना हिले-डुले, बिना सिर घुमाये फिर आवाज दी "पेत्रो! मेरे बेटे!"

फिर पुआल के ढेर के पास पैरो से कुचली बर्फ पर चित लेट गया और आखे मूद ली।

* * *

गाव मे अनाज-वसूली की और दान के निचले भाग मे आनेवाले डकैत गिरोहो की बाते उड रही थी। कार्यकारिणी समिति मे गाव के निवासियो की सभाओ मे फुसफुसाकर खबरे सुनायी जाती थी, पर बूढे गवरीला ने एक बार भी कार्यकारिणी समिति की टेढी ड्योढी पर पाव नही रखा था, जरूरत नही पडी, इसलिये उसने बहुत-सी बाते नही सुनी, बहुत कुछ उसे मालूम न था। उसे बडा अजीब लगा जब इतवार के दिन गिरजे मे दोपहर की प्रार्थना के बाद अध्यक्ष उसके यहा आया। अध्यक्ष के साथ उल्टी खाल के पीले छोटे ओवरकोट पहने तीन राइफलधारी थे।

अध्यक्ष ने गवरीला से हाथ मिलाया और फट से पूछा

"दादा, कबूल करो अनाज है तुम्हारे पास?"

"और तुम क्या सोचते थे, हवा मे पेट भरते है क्या?"

"तुम मजाक मत करो, ठीक से बताओ कहा है अनाज?"

"होगा कहा, बखार मे है।"

"चलो।"

"पर यह तो बताओ कि मेरे अनाज से तुम्हारा क्या रिश्ता?"

लम्बे कद के, सुनहरे बालोवाले ने जो देखने मे उनका मुखिया लगता था, ठड के कारण बूटो की एडिया पटकते हुए कहा

"राज्य के लिये फालतू अनाज इकट्ठा कर रहे है। अनाज-वसूली चल रही है। सुना है, बाबा?"

"पर अगर मै न दू?" गवरीला गुस्से मे फुफकारकर बोला।

"नही दोगे? तो खुद ले लेगे!"

अध्यक्ष के साथ कानाफूसी करके वे बखार मे घुस गये, सुनहरे-सावले, चुने गेहू पर उनके बूटो से बर्फ के चिथडे बिखर गये। सुनहरे बालोवाले ने सिगरेट पीते हुए फैसला किया

'बीज और खाने के लिये छोडकर बाकी सब वसूल कर लो।' मालिक की नजर से उसने अनाज की मात्रा का अनुमान लगाया और गवरीला की ओर मुडकर बोला, "कितनी जमीन बोओगे?"

"ठेगा बोऊगा!" गवरीला फटी आवाज मे खासता हुआ बोला। "ले जाओ पापियो! लूट लो! सब तुम्हारा ही तो है!"

"तुम्हे क्या पागल कुत्ते ने काटा है, होश मे आओ, गवरीला दादा!" अध्यक्ष गवरीला को मनाने लगा।

'पराया माल तुम्हारे गले मे अटके! ठूसो अपने पेट मे!'

सुनहरे बालोवाले ने अपनी मूछो पर पिघलती बर्फ को झाडा और गवरीला को व्यग्यपूर्ण अदाज मे आख मारकर, शात मुस्कान के साथ बोला

"बाबा, तुम फुदको मत! चिल्लाने का कोई फायदा नही। तुम चू-चू क्यो कर रहे हो, क्या किसी ने तुम्हारी दुम पर पैर रख दिया है?" और भौहे सिकोडकर बिलकुल दूसरे लहजे मे बोला "जबान सभाल! अगर लम्बी है तो काट ले दातो से! ऐसे प्रचार के लिये" बात पूरी किये बिना उसने पेटी से लटके पिस्तौल के पीले खोल पर हाथ मारा और नर्म स्वर मे बोला "आज ही अनाज वसूली-केन्द्र पहुचा देना!"

यह बात नही थी कि बूढा डर गया, पर दृढ और स्पष्ट आवाज मे वह सहम गया, समझ गया कि सचमुच चिल्लाने से कुछ नही होगा। हाथ झाडकर वह घर की ड्योढी की ओर चल पडा। उसने अभी आधा आगन भी पार न किया था कि वह वहशी चीख से सिहर गया

"कहां है अनाज-वसूली दस्ता?!"

गवरीला ने मुड़कर देखा – टहनियों से बनी बाड़ की दूसरी ओर पिछली टांगों पर नाचते घोड़े पर घुड़सवार बैठा था। किसी असाधारण घटना के पूर्वाभास से गवरीला के घुटने कांपने लगे। वह मुंह भी न खोल पाया कि घुड़सवार ने बखार के पास खड़े लोगों को देखकर झटके से घोड़े को रोका और पलक झपकते कंधे से रायफ़ल उतार ली।

धांय से गोली चली, गोली चलने के बाद आंगन में छायी क्षणिक नीरवता में रायफ़ल का बोल्ट खटकने की आवाज़ सुनायी पड़ी और कारतूस का खोल सूं ऽऽ करके गिरा।

स्तब्धता टूट गयी: सुनहरे बालोंवाला चौखट से चिपक गया, कांपते हाथ से रिवाल्वर को खोल से निकालने में उसे बड़ी देर लग रही थी। अध्यक्ष आंगन में खरगोश की तरह फुदकता हुआ खलिहान की ओर दौड़ पड़ा, अनाज-वसूली दस्ते का एक आदमी बाड़ के पीछे हिलती काली टोपी पर कारबाइन से गोलियां चलाते हुए घुटने के बल गिर गया। अहाता गोलियों की धांय-धांय से भर गया। मानो बर्फ़ से चिपके अपने पैर गवरीला ने मुश्किल से उठाये और भारी क़दम घसीटता हुआ घर की ड्योढ़ी की ओर चल पड़ा। जब उसने मुड़कर देखा तो उल्टी खाल के कोट पहने तीन जने बिखरकर, बर्फ़ के ढेरों में फंसते हुए खलिहान की ओर दौड़ रहे थे और बेबाक़ खुले फाटक में घुड़सवार उमड़ते आ रहे थे।

आगेवाला घुड़सवार कुबानी टोपी पहने था। अपने ललौहे घोड़े पर झुककर उसने सिर के ऊपर तलवार घुमायी। गवरीला की आंखों के सामने हंस के डैनों की तरह उसके सफ़ेद बाशलिक* के सिरे चमके, घोड़े के खुरों से उछली बर्फ़ के छींटे चेहरे पर पड़े।

निढाल गवरीला नक्काशीदार ड्योढ़ी का सहारा लेकर खड़ा हो गया। उसने देखा कि ललौंहा घोड़ा सिमटा और टहनियों की बाड़ को फांद गया, जौ की पुआल के ढेर के पास पिछली टांगों पर खड़ा होकर घूमने लगा और कुबानी कज़्ज़ाक, ज़ीन से लटककर, घुटनों

* बाशलिक – (तुर्क) लम्बे सिरोंवाला हुड जो टोपी और मफलर दोनो का काम देता है। – अनु०

पर रेगते अनाज-वसूली दस्ते के आदमी पर तलवार से आडे-तिरछे वार करने लगा

खलिहान से अस्पष्ट-सा शोर, हाथापाई की आवाज और किसी का दारुण चीत्कार सुनायी पडा। पल भर बाद सिर्फ एक बार धाय की आवाज आयी। गोलीबारी से डरकर उडे कबूतर उस समय बखार की छत पर उतर रहे थे, वे चौककर आकाश मे बैगनी छर्रो की तरह फैल गये। घुडसवार खलिहान मे अपने घोडो से उतर गये।

गाव मे निरतर घटे-घडियाल बज रहे थे। गाव का पगला लडका पाशा गिरजे के घटागार पर चढ गया था, वह अपने पगलेपन के कारण खतरे का घटा बजाने की जगह ईस्टर-नृत्य की धुन बजा रहा था।

कधो पर सफेद बाशलिक डाले कुबानी कज्जाक गवरीला के पास आया। उसका पसीने से गीला तमतमाया चेहरा फडक रहा था, होठो के लटके कोने थूक से गीले थे।

"जई है?"

गवरीला कठिनाई के साथ हिला अभी-अभी उसने जो कुछ देखा था उससे उसकी जबान को मानो लकवा मार गया।

"शैतान की औलाद, क्या तू बहरा हो गया?! पूछ रहा हू, जई है? बोरी ला!"

चारे की नाद के पास घोडो को ला भी न पाये थे कि एक और घुडसवार घोडे को सरपट दौडाता फाटक मे घुसा।

"चढो घोडो पर! पहाडी से पैदल फौज आ रही है"

कुबानी कज्जाक ने कोसकर भाप छोडते पसीने मे तर अपने घोडे को लगाम पहनायी और बडी देर तक अपनी दायी आस्तीन के कफ को बर्फ मे रगडता रहा जो किसी सिदूरी-लाल चीज मे सना था।

फाटक से पाच घुडसवार निकले, पिछलेवाले की जीन मे बधे खून के धब्बो से सने उल्टी खाल के पीले ओवरकोट को गवरीला ने पहचान लिया – वह सुनहरे बालोवाले का था।

* * *

टीले के पीछे बेर की झाडियोवाली घाटी मे शाम तक गोलिया चलती रही। पिटे कुत्ते की तरह दुम दबाकर सन्नाटा गाव मे पसरा

पडा था। जब गवरीला खलिहान मे जाने का साहस जुटा पाया तब तक साझ का झुटपुटा छा गया था। उसने खुले दरीचे मे प्रवेश किया। अध्यक्ष सिर लटकाये खलिहान के बाडे की बल्ली पर पडा था। गोली ने यही उसको धराशायी कर दिया था। उसके लटके हाथ, मानो बाड की दूसरी ओर गिरी टोपी को उठाने का यत्न कर रहे थे।

पुआल के ढेर के पास, जहा जूठन और भूसी बिखरी पडी थी, बर्फ पर अनाज-वसूली दस्ते के तीनो जने एक पात मे लेटे हुए थे। कच्छे-बनियान के अलावा उनके सारे कपडे उतरे हुए थे। इस भयकर दृश्य से दहले गवरीला के दिल मे उनके प्रति अब वह क्रोध न रहा, जो सुबह खौल रहा था। यह दुस्वप्न लगता था कि उसके खलिहान मे जहा हमेशा पडोसी की बकरिया उत्पात मचाती थी, पुआल के गट्ठर मे मुह मारती थी अब तिनके की तरह कटे तीन लोग पडे है, और उनमे, डबरो मे जमे उनके फेनिल खून मे अब मुर्दो की हल्की-सी बू फैलने लगी है।

सुनहरे बालोवाला अस्वाभाविक मुद्रा मे सिर मोडे पडा था अगर सिर बर्फ मे न चिपका होता तो यह लग सकता था कि वह टाग पर टाग रखकर लेटा हुआ बेफिक्री से आराम कर रहा है।

दूसरा चेचक के दाग और काली मूछोवाला कधे उचकाकर धनष की तरह पडा था, उसके अधखुले मुह मे चमकते दातो पर अडिगता और क्रोध का भाव था। तीसरा पुआल मे सिर छिपाये बर्फ पर तैराक की मुद्रा मे औधा पडा था उसकी फैली निर्जीव बाहे इतनी शक्तिशाली लगती थी।

गवरीला सुनहरे बालोवाले के ऊपर झुका काले पडे चेहरे को ध्यान से देखकर वह करुणा से सिहर गया उसके सामने कोई उन्नीसेक बरस का छोकरा पडा था, न कि गुस्सैल, कटखनी आखोवाला खाद्य-कमिसार। मूछो के पीले रोयो के पास होठ पर पाला जम रहा था, बस माथे पर आडी काली झुर्री थी – गहरी और गभीर।

गवरीला ने यू ही हाथ से उसकी नगी छाती को छुआ। आकस्मिकता ने उसे झिझोड दिया उसकी हथेली को बर्फीली ठड मे बुझती गर्मी की अनुभूति हुई

जब कराहता और हाफता गवरीला खून से लथपथ, अकडे शरीर को पीठ पर लादकर लाया तो बुढिया का मुह खुला का खुला रह गया,

वह सलीब बनाते हुए अलावघर के पास हट गयी।

गवरीला ने उसे बेच पर लिटाया, ठडे पानी से धोया, और मोटे ऊनी मोजे से हाथ, पाव, छाती को तब तक रगडता रहा जब तक खुद पसीने से तर होकर निढाल न हो गया। उसने घिनौनी ठडी छाती से कान लगाया और बडी मुश्किल से उसे दिल की धडकन सुनायी दी, दिल रुक-रुककर धडक रहा था।

* * *

चार दिन से वह मुर्दे की भाति केसरी-पीला कमरे मे लेटा था। माथे से लेकर गाल तक तलवार के लाल घाव मे खून जम गया था, कसकर पट्टी से बधी छाती कबल को ऊपर-नीचे उठाती घर्रघर्र, गुडगुड करती फेफडो मे हवा भरती थी।

रोज गवरीला उसके मुह मे अपनी फटी, रूखी उगली डालता, छुरी की नोक से, सावधानी के साथ, उसके भिचे जबडो को खोलता और बुढिया सरकडे की नली से गर्म दूध और भेड की हड्डियो की यखनी डालती।

चौथे दिन सुनहरे बालोवाले के गालो पर हल्की-सी लाली छा गयी दोपहर तक उसका चेहरा दहकते अगारे जैसा लाल हो गया, सारा शरीर कापने लगा और ठडा चिपचिपा पसीना आने लगा।

तब से वह बेहोशी मे बडबडाने लगा पलग से उठने की कोशिश करने लगा। गवरीला और बुढिया दिन-रात बारी-बारी से उसके पास बैठे रहते।

जाडे की लम्बी रातो मे जब दोन के दियारे से आती पुरबिया काले आकाश मे उथल-पुथल करती गाव के ऊपर ठडी घटाओ को बिछा देती, गवरीला हाथो पर सिर टिकाकर घायल के पास बैठा अपरिचित बोली मे उसकी बडबडाहट को कान लगाकर सुनता, देर-देर तक उसकी काले गड्ढोवाली बद आखो की आसमानी पलको को देखता रहता। और जब बदरग होठो से लम्बी कराह, फटे स्वर मे कोई फौजी आदेश या भद्दी गाली निकलती और चेहरा क्रोध व दर्द से विकृत हो उठता – गवरीला का दिल पसीज जाता। ऐसे क्षणो मे करुणा बिनबुलाये मेहमान की तरह मुह उठाये आ जाती।

गवरीला देख रहा था कि हर दिन के साथ, बिना पलक मूंदे बितायी गयी हर रात के साथ बुढ़िया पलंग के पास बैठी-बैठी सूखती जा रही है। गवरीला ने उसके झुर्रियों से ढके गालों पर आंसू भी बहते देखे थे और वह समझ गया, सच कहा जाये तो अपने दिल से उसने महसूस किया कि भगवान को प्यारे हुए बेटे पेत्रो के प्रति उसके मन में बची ममता इस निर्जीव-से, मौत के मुंह से निकले पराये बेटे को देखकर धधक उठी है।...

एक बार गांव से गुज़रती रेजिमेंट का कमांडर आया। घोड़े को फाटक पर ही अर्दली को सौंपकर तलवार और महमेज़ें खड़काता दौड़कर ड्योढ़ी पर चढ़ गया। कमरे में उसने टोपी उतार दी और बड़ी देर तक घायल के पास मौन खड़ा रहा। घायल के चेहरे पर धुंधली छायाएं तैर रही थी, बुख़ार से फटे होंठो से खून रिस रहा था। कमांडर ने समय से पहले सफ़ेद हुए बालोंवाला अपना सिर हिलाया और धुंधली आंखों से न जाने किस ओर देखते हुए गवरीला से बोला:

"बाबा, हमारे साथी को बचा लो!"

"बचा लेंगे!" गवरीला ने दृढ़ता से उत्तर दिया।

दिन और सप्ताह बीतते जा रहे थे। बड़ा दिन गुज़र गया। सोलहवे दिन सुनहरे बालोवाले ने पहली बार आंखे खोली और गवरीला को अस्फुट स्वर सुनायी पड़ा:

"बाबा, यह तुम हो?"

"हां।"

"मेरी ज़बर्दस्त हजामत बनायी थी?"

"भगवान किसी की ऐसी न करे!"

उसकी निर्मल, दुर्ग्राह्य नज़रों में गवरीला को मासूम कटाक्ष का आभास-सा हुआ।

"और मेरे साथी?"

"उन्हें वो... उन्हें चौक पर दफ़ना दिया है।"

उसने कंबल पर टिकी उंगलियां हिलायी और छत के बिना रंगे तख्तो की ओर आंखें उठा ली।

"तुम्हारा नाम क्या है?" गवरीला ने पूछा।

नसों से ढकी आसमानी पलकें धीरे से झुकीं।

"निकोलाई।"

"पर हम तुम्हे पेत्रो कहकर पुकारा करेगे   हमारा बेटा था पेत्रो   " गवरीला ने उसे ममझाया।

कुछ सोचकर और किसी चीज के बारे मे पूछना चाहता था पर उमे नाक की खर्र-खर्र सुनायी पडी और वह बाहे फैलाकर दबे पाव पलग के पाम से हट गया।

* * *

उसमे जीवन धीरे-धीरे, मानो अनिच्छा से लौट रहा था। दूमरे महीने में वह बडी मुश्किल मे अपना सिर तकिये मे उठा पाया था, पीठ पर लेटे रहने के कारण चकत्ते पड गये थे।

हर दिन के साथ गवरीला को भय के साथ यह अनुभूति होती कि उसे नये पेत्रो से गहरा लगाव होता जा रहा है और पहले, अपने बेटे की छवि उमी तरह धूमिल होती जा रही है जैसे मकान की अभ्रक जडी खिडकी पर अस्ताचलगामी सूरज की चमक। वह पहलेवाले दु ख और पीडा को लौटाने की लाख कोशिश करता पर अतीत दूर, बहुत दूर होता जाता और इमसे गवरीला को मन ही मन शर्म आती, अट-पटा लगता।   मवेशियो के बाडे मे जाकर घटो कुछ न कुछ करता रहता पर यह याद करके कि पेत्रो के पलग के पास बुढिया निरतर बैठी है उमे ईर्ष्या होती। घर मे जाकर मिरहाने के पाम खडा हो जाता अपनी अकडी उगलियो से तकिये का गिलाफ ठीक करता और बुढिया की क्रुद्ध नजर को देखकर चुपचाप बेच पर बैठ जाता।

बुढिया पेत्रो को मारमोट की चर्बी और वसत मे जमा की गयी जडी-बूटियो का काढा पिलाती। इस वजह से या बीमारी पर जवानी की शक्ति के हावी होने के कारण घाव भर गये, भर आये गालो पर लाली छाने लगी, बस दाया हाथ चगा होने मे देर लगा रहा था, क्योकि घाव के साथ हड्डी भी टूट गयी थी लगता था कि वह बेकार ही हो जायेगा।

फिर भी ईस्टर उपवास के दूसरे सप्ताह पेत्रो पहली बार खुद, किसी की सहायता के बिना, पलग पर बैठ गया, उसे अपनी शक्ति पर आश्चर्य हो रहा था, बडी देर तक वह मुस्कराता रहा, उसे विश्वास नही हो रहा था।

रात को, रसोई मे अलावघर की टाड पर खासते हुए गवरीला ने फुसफुसाकर पूछा

"तू मो रही है, बुढिया?"

"क्या चाहिये?"

"हमारेवाला तो पैरो पर खडा होने की तैयारी कर रहा कल सदूक मे पेत्रो की पतलून निकाल लेना मारे कपडे तैयार कर देना उमके पाम पहनने को तो कुछ है नही।"

"मै खुद जानती हू! कबके निकाल रखे है!"

"बडी चट है! खाल का ओवरकोट तो निकाला नही?"

"छोरा क्या ऐसे ही ठड मे घूमेगा भला!"

गवरीला करवटे बदलने लगा नीद बस आ ही गयी थी, पर याद करके उसने विजेता की तरह मिर उठाया

'और टोपी? टोपी के बारे मे तो भूल गयी होगी तू बुड्ढी बत्तख?"

"छोडो भी मेरा पिड! मौ बार पाम मे गुजरे एक बार तो देख लिया होता दो दिन मे वहा कील पर टगी है! "

गवरीला खीजकर खामा और चुप हो गया।

चचल वमत दोन को बर्फ की जकड मे मुक्त करने लगा। बर्फ काली भुरभुरी और ऊबड-खाबड हो गयी मानो उसम कीडे पड गये हो। पहाडी गजी हो गयी। बर्फ स्तेपी मे रेंगकर बीहडो और घाटियो म दुबक गयी। दोन का दियारा धूप की बाढ मे डूबा मुप्त था। स्तेपी मे आती हवा नागदौन की स्फूर्तिदायी कसैली गध अपने साथ लाती थी।

मार्च का महीना ममाप्त हो रहा था।

* * *

बाबा आज खडा हो जाऊगा!"

हालांकि गवरीला के घर मे आनेवाले मभी लाल मैनिक उसके सफेद बालो को देखकर गवरीला को 'बाबा' कहकर ही पुकारते, पर इम बार स्वर मे उसे अपनेपन की अनुभूति हुई। उसे शायद ऐसा लगा या फिर वास्तव मे ही पेत्रो ने इस शब्द मे पुत्र का प्रेम भरा, जो भी हो गवरीला बिलकुल लाल हो गया, उसे खामी आ गयी और लजाई खुशी का छिपाकर बुदबुदाया

"तीसरा महीना लग गया तुम्हे लेटे-लेटे अब तो पेत्रो, उठने का वक्त आ गया!"

पेत्रो गेंडियो की तरह पैर रखता ड्योढी मे निकला और फेफडो मे घुसे हवा के तेज झोके से उसका दम घुटते-घुटते बचा। गवरीला उसे पीछे से सहारा दे रहा था और बुढिया ड्योढी के पास बेचैन खडी अपने आसुओ को पल्ले से पोछ रही थी।

बखार के पास से गुजरते हुए धर्म-पुत्र – पेत्रो ने पूछा

"सब अनाज दे आये थे?"

"दे आया " गवरीला अनमने मे बुदबुदाया।

"बहुत अच्छा किया, बाबा!"

और फिर 'बाबा' शब्द सुनकर गवरीला गदगद हो गया। रोज पेत्रो बहगी का सहारा लेकर लगडाता हुआ धीरे-धीरे अहाते मे टहलता। गवरीला चाहे जहा होता, खलिहान मे ओसारे मे, सब जगह से वह अपने नये बेटे को बेचैन अन्वेषी नजरो से देखता। कही ठोकर खाकर गिर न जाये!

आपस मे वे कम ही बोलते थे, पर सबध उनके बीच सरल और मधुर हो गये थे।

उस दिन के कोई दो-एक दिन बाद जब पेत्रो पहली बार बाहर निकला था रात को सोने की तैयारी करते हुए गवरीला ने पूछा

"बेटे, तुम कहा के हो?"

"उराल से आया हू।"

"किसान-परिवार के हो?"

नही, मजदूर हू।"

"क्या मतलब? कोई धधा करते थे क्या, जैसे मोची या बढई का?'

"नही, बाबा, मै कारखाने मे काम करता था। लोहा ढालने के कारखाने मे। बचपन मे वही काम किया।'

"और अनाज वसूल करने कैसे आये?'

"फौज ने भेजा था।'

"तुम क्या उनके कमाडर थे?"

"हा।"

पूछते हुए झिझक हो रही थी पर बातचीत का मक़सद तो यही था:

"मतलब यह कि तुम पार्टी के आदमी हो?"

"हां, मैं कम्युनिस्ट हूं।" पेत्रो ने निश्छल मुस्कान के साथ कहा।

और इस निष्कपट मुस्कान के कारण गवरीला को पराया शब्द 'कम्युनिस्ट' अब भयावह नहीं लगा।

बुढ़िया ने मौक़ा देखकर झट से पूछा:

"पेत्रो प्यारे, तुम्हारा परिवार तो है न?"

"कोई नही है मेरा!.. आसमान में चांद की तरह अकेला हूं!"

"मां-बाप क्या मर गये?"

"बच्चा ही था, कोई सात-एक साल का था... बाप शराबियों की लड़ाई में मारा गया और मां कहीं गुलछर्रे उड़ा रही है...'

"देखो तो कुतिया को! मतलब तुम्हें, नन्हे-से को भाग्य के सहारे छोड़ गयी?"

"किसी ठेकेदार के साथ भाग गयी और मैं कारख़ाने में पला।"

गवरीला टांड़ से पैर लटकाकर बैठ गया, बड़ी देर तक चुप रहा, फिर एक-एक शब्द को तौलकर धीरे-धीरे बोलने लगा:

"तो बेटे, अगर तुम्हारा कोई रिश्तेदार नही तो हमारे पास ही रह जाओ... हमारा बेटा था, उसी की तरह हम तुम्हें पेत्रो कहकर बुलाते है.. था बेटा पर न रहा और अब मैं और बुढ़िया, हम दोनों अकेले रह गये हैं.. तुम्हारे लिये हमने कितनी मुसीबतें उठायी, शायद इसी से हमें तुम से लगाव हो गया। चाहे तुम में पराया ख़ून है, पर हमारा दिल तुम्हारे लिये अपने ही बेटे की तरह दुखता है... रह जाओ यही! तुम्हारे साथ मिलकर खेती करेंगे, दोन प्रदेश की ज़मीन बड़ी उपजाऊ है... तुम्हारे कपड़े-लत्ते बनवा लेंगे, बहू लायेंगे... मैंने तो जितना हो सकता था कर लिया, अब घर-बार तुम ही संभालो। बस तुम हमारे बुढ़ापे का ख़याल रखना, मरने तक दो वक़्त की रोटी देते रहना... हमें छोड़कर मत जाना पेत्रो..."

अंगीठी के पीछे से झींगुर की नीरस झंकार सुनायी पड़ रही थी।

हवा से खिड़की के किवाड़ चरमरा रहे थे।

"मैंने और बुढ़िया ने तुम्हारे लिये बहू की खोज शुरू कर दी

है! ." गवरीला ने कृत्रिम हर्ष से आंख मारी, पर होंठ कांपे और उन पर करुण मुस्कान आ गयी।

पेत्रो टकटकी बांधे ऊबड़-खाबड़ फ़र्श को देख रहा था, बायें हाथ की उंगलियों मे वह बेंच पर ठक-ठक कर रहा था। रुक-रुककर आती यह ध्वनि व्यथित कर रही थी।

स्पष्टतः, वह अपने उत्तर पर विचार कर रहा था। और फ़ैसला करके उसने ठक-ठक बंद की, सिर झटका:

"बाबा, मैं आपके यहां खुशी से रह जाऊंगा, पर खुद देखते हो, मै ढंग का काम करने लायक़ रहा नही. हाथ मेरा चंगा होने का नाम ही नही लेता, साला! पर काम मैं करूंगा जितना हो सकेगा। गर्मी भर यही रहूगा, बाद में देखा जायेगा।"

"और बाद में शायद तुम यही रह जाओगे!" गवरीला ने बात पूरी की।

बुढ़िया का चरखा हर्षोल्लास के साथ तकली पर रोयेंदार ऊन को लपेटता हुआ घरघराने लगा।

न मालूम वह थपक-थपककर लोरी सुना रहा था या मज़े की ज़िंदगी का लालच दे रहा था।

* * *

वसंत के बाद तपती धूप, स्तेपी की घनी धूल भरे दिन आये। बहुत दिनों के लिये मौसम माफ़ हो गया। अल्हड़ और तीव्र दोन में ऊंची-ऊंची लहरें उठने लगी। वसंत की बाढ़ का पानी गांव के छोर के मकानों तक चढ़ आया। दोन के हरित-श्वेत दियारे में फूलते पोपलरों की मधुर सुगंध व्याप्त हो गयी, मैदान में जंगली सेबो की झड़ी पंखुड़ियों से ढकी झील उषा की लालिमा की तरह दीप्तिमान थी। रातों में क्षितिज पर बिजलियों की चमक बालाओं की तरह आख-मिचौली खेलती, रातें भी क्षितिज पर बिजली की क्षणिक चमक की तरह छोटी हो गयी। दिन भर के काम के बाद बैलों को आराम नही मिल पाता था। ढोर चरागाहों में चरते थे।

हफ़्ते भर मे गवरीला पेत्रो के साथ स्तेपी में ही रह रहा था। वे जुताई करते, हेंगा चलाते, बोवाई करते और रात को छकड़े के

नीचे दोनो एक ही ओवरकोट को ओढ़कर सोते। पर गवरीला ने कभी यह नही कहा कि नये बेटे ने उसे कितना कसकर अदृश्य सूत्र से बाध लिया है। हसमुख, कर्मठ सुनहरे बालोवाले ने दिवगत पेत्रो की छवि को धूमिल कर दिया। उसके बारे मे गवरीला अब बहुत कम ही सोचता था। और काम मे लगे रहने से सोचने का समय भी नही मिलता था।

दिन चोरो की तरह चुपचाप खिसकते जा रहे थे। घास काटने के दिन आ गये।

सुबह से पेत्रो घास काटने की मशीन को ठीक करने मे जुटा था। उसने लोहारखाने मे उसके ब्लेडो पर धार चढायी और टूटे हिस्सो की जगह नये बनाकर लगा दिये। गवरीला यह देखकर चकित रह गया। सुबह से घास काटने की मशीन मे लगा रहा और साझ ढलने पर कार्यकारिणी के दफ्तर चला गया किसी सम्मेलन का बुलावा आया था। उसी समय बुढिया जो पनघट पर गयी थी रास्ते मे डाकघर से एक चिट्ठी लायी। लिफाफा पुराना, चीकट था, पता गवरीला का था। लिफाफे पर लिखा था कामरेड निकोलाई कोसीख के लिये।

अनिष्ट की अस्पष्ट-सी अनुभूति के साथ बडी देर तक गवरीला कापिग पेंसिल से चौडी लिखावट मे लिखे धुधले अक्षरोवाले लिफाफे को हाथो मे पलटता रहा।

वह रोशनी की तरफ करके देखता पर लिफाफा किसी के रहस्य की मुस्तैदी से रक्षा कर रहा था और गवरीला को इस पत्र के प्रति, जिसने जीवन के शात क्रम को भग कर दिया, बढते क्रोध की अनुभूति हो रही थी।

मन मे विचार कौधा – फाड दू, पर कुछ सोचकर उसे दे देने का फैसला किया। फाटक पर ही उसने पेत्रो को खबर सुना दी

"बेटे, तुम्हारे लिए कही से चिट्ठी आयी है।"

"मेरे लिए?" उसे आश्चर्य हुआ।

"हा, तुम्हारे लिये है। जाओ, पढ लो!"

कमरे मे बत्ती जलाकर गवरीला पैनी, टोहक निगाहो से, पत्र पढते पेत्रो के खुश चेहरे को देख रहा था। उससे रहा न गया और पूछ बैठा

"कहा से आयी है?"

"उराल से।"

"किसकी है?" बुढिया ने कौतूहल के साथ पूछा।

"कारखाने के साथियो की है।"

गवरीला का माथा ठनका।

"क्या लिखते है?"

पेत्रो की आखो मे अधेरा छा गया। अनिच्छा के साथ उसने उत्तर दिया

"कारखाने मे बुला रहे है   उसे चालू करना चाहते है। सन् सत्रह मे रुका पडा है।"

"यह कैसे?   मतलब तुम जाओगे?" फटे स्वर मे गवरीला ने पूछा।

"पता नही   "

* * *

पेत्रो सूखकर पीला पड गया। रात को गवरीला उसे पलग पर करवटे बदलते, आहे भरते सुनता। बहुत सोच-विचार के बाद वह समझ गया कि पेत्रो गाव मे नही रहेगा, स्तेपी की अछूती श्यामल भूमि की छाती पर हल नही चलायेगा। पेत्रो को पाल-पोसकर बडा करनेवाला कारखाना एक न एक दिन उसे छीन ही लेगा और फिर से काले, मनहूस दिनो का क्रम शुरू हो जायेगा। बस चलता तो गवरीला घृणित कारखाने की ईट से ईट बजा देता, उसे मिट्टी मे मिला देता ताकि वहा सिर्फ बिच्छू बूटी और जगली घास ही उगे!

तीसरे दिन घास की कटाई के समय जब वे दोनो पडाव पर पानी पीने आये, पेत्रो बोला

"बाबा, मै यहा नही रुक सकता! कारखाने मे जाऊगा   वह मुझे बुलाता है, मन मे उथल-पुथल करता है   "

"क्या यहा की जिदगी अच्छी नही है?   "

"नही, यह बात नही   कारखाना अपना है, जब कोल्चाक* ने चढाई की तो डेढ हफ्ते तक उसकी रक्षा करते रहे, कोल्चाक के

* एडमिरल कोल्चाक (१८७४-१९२०) प्रतिक्रांतिकारी श्वेत सेना का नायक।—स०

लोगो ने बस्ती पर कब्जा करते ही नौ जनो को फासी दे दी। और अब जो मजदूर फौज मे लौटे है, फिर से कारखाने को पैरो पर खडा कर रहे है वे खुद और उनके बाल-बच्चे भूखो मर रहे है, पर काम कर रहे है ऐसी हालत मे मै यहा कैसे रह सकता हू? मेरा जमीर क्या बोलेगा?"

"तुम क्या मदद कर पाओगे? एक हाथ तो तुम्हारा किसी काम का नही।"

"बाबा, आप भी अजीब बात करते है! वहा एक-एक हाथ अनमोल है!"

"मै तुम्हे नही रोकता। जाओ! " गवरीला ने खुद को ढाढस देते हुए कहा, "बुढिया को मत बताना कह देना कि लौट आओगे कुछ दिन रहकर लौट आओगे नही तो तडप-तडपकर मर जायेगी एक तुम ही तो हमारा सहारा थे "

आशा की अतिम किरण बची थी, गवरीला ने फुसफुसाकर, हाफते हुए पूछा

"क्यो सचमुच लौट आना। हू? क्या हमारे बुढापे पर इतना भी तरस नही खाओगे क्यो?"

* * *

छकडा चू-चू कर रहा था, बैल अपनी मौज मे चल रहे थे, पहियो से कुचलकर खडिया मिट्टी खर-खर बिखर रही थी। दोन के किनारे किनारे बल खाती सडक चैपल के पास बायां ओर मुड रही थी। मोड से कस्बे के गिरजे और बागो की हरियाली दिखायी पड रही थी।

गवरीला रास्ते भर बतियाता जा रहा था। वह मुस्कराने की कोशिश करता।

"इस जगह कोई तीन साल पहले लडकिया दोन मे डूब गयी थी। इसीलिये चैपल बना है।" उसने चाबुक की मूठ से चैपल की मनहूस चोटी की ओर इशारा किया। "यही हम विदा लेगे। आगे रास्ता नही है। पहाडी खिसक गयी है। यहा से कस्बे तक कोई वेर्स्ता भर की दूरी होगी, धीरे-धीरे पहुच जाओगे।"

पेत्रो ने पेटी मे लटके खाने के झोले को ठीक किया और छकडे

मे उतर गया। बडी मुश्किल मे रुलाई को दबाकर गवरीला ने चाबुक जमीन पर पटका और कापती बाहे फैलायी।

"अलविदा, मेरे प्यारे! तुम्हारे बिना हमारे लिये सूरज डूब जायेगा " और पीडा से विकृत, आसुओ से भीगे चेहरे को तिरछा करके तीखी, चिल्लाहट भरी आवाज मे बोला "बेटे, खाने की चीजे तो नही भूले? बुढिया ने तुम्हारे लिये बनायी नही भूले? ठीक है, अलविदा! बेटे प्यारे, अलविदा! "

पेत्रो लगडाता हुआ सडक के सकरे किनारे पर चल पडा, वह लगभग दौड ही पडा था।

"लौट आना! " छकडे का सहारा लेकर गवरीला चिल्ला रहा था।

"नही लौटेगा! " मन मे गूज रहा था।

मोड पर आखिरी बार सुनहरे बालोवाला प्यारा सिर चमका, आखिरी बार पेत्रो ने टोपी हिलायी और उस स्थान पर जहा उसका पाव पडा, चचल हवा ने सफेद धूल का गुबार उडा दिया।